(1)
August 2004

(22)

भारत के प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह, दिनांक १५.०८.२००४ को लाल किले की प्रचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए।

मेरे प्यारे देशवासियो, भाइयो, बहनो और प्यारे बच्चो,

आप सबको मैं स्वतंत्रता दिवस की बधाई देता हूं। (तालियां) इस दिन हम अपने तिरंगे को नमन करते है। नीले आसमान में इसे ऊंचा लहराते देखकर हमें खुशी और गर्व होता है। इस दिन हम स्वतंत्रता संग्राम के उन सिपाहियों को याद करके, उनका आदर करते हैं जिन्होंने महात्मा गांधी जी के महान नेतृत्व में विदेशी शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी और शानदार जीत हासिल की। इस दिन हम अपने जवानों तथा सुरक्षा बलों को उनकी बहादुरी और बलिदान के लिए धन्यवाद देते हैं। उनकी कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के लिए अभिवादन करते हैं। किसान, मजदूर, अध्यापक, व्यापारी, पेशेवर लोग, वैज्ञानिक और जनप्रतिनिधि हम सभी अपने अपने ढंग से, अपने अपने तरीकों से प्यारे भारत के निर्माण के लिए काम करते हैं। ये भारत कैसा हो? एक ऐसा भारत जहां इंसाफ और इंसानियत फले और फूले। एक ऐसा भारत जहां सभी नागरिक समान हों। एक ऐसा भारत जो खुशहाल हो। एक ऐसा भारत जहां अमन चैन हो। एक ऐसा भारत जहां हर नागरिक पढ़ा लिखा हो तथा सेहतमंद हो। एक ऐसा भारत जिसमें हर व्यक्ति को रोजगार मिले। एक ऐसा भारत जिसमें आम आदमी का भविष्य उज्जवल हो।

आज यहां आपके सामने खडे होकर मुझे हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू जी के शब्द याद आ रहे हैं। उन्होंने सन् १९४८ में हमारी आजादी की पहली साल गिरह पर देश को सम्बोधित किया था। मैं उस समय एक नौजवान छात्र था। मुझे आजादी के उदय की किरणों में हमारे सपनों का भारत बनाने के नये अवसर दिखाई दे रहे थे। तब पण्डित जी ने कहा था हम सभी भारत के बारे में बातें करते है और भारत से कई चीजों की उम्मीद रखते हैं। (तालियां) पण्डित जी ने पूंछा लेकिन इसके बदले हम भारत को क्या देते हैं और जबाव में उन्होंने कहा जो प्यार हम भारत को देंगे, जो सेवा हम इसकी करेंगे और जो रचनात्मक काम हम इसके लिए करेंगे वही हमारे, वही हमें भारत से मिलेगा। जैसा हम बनेंगे, वैसा ही भारत बनेगा। हमारे विचार और काम उसका स्वरूप तय करेंगे। मित्रों मैं आप सभी से एक गुजारिश करता हूं कि आज जब भी अपना रोजमर्रा का काम शुरू करें चाहे वो खेतों में हो, कारखानों में हो, स्कूलों में हो, सरकारी दफ्तरों में हो, दुकानो में हो , रिसर्च लेबोरिटिज में हो , तब पण्डित जी के इन शब्दों को हमेशा याद रखिये। जो हम हैं वही हमारा देश है। हम अपने आप को बनायेंगे, वैसा हमारा देश भी बनेगा।

(23)

भाइयो और बहनो, एक एक ईंट से इमारत खड़ी होती है और लाखों ईंटों को जोड़कर एक बड़ी ईमारत बनती है। ठीक इसी तरह लाखों और करोड़ों लोगों के प्रयासों से एक राष्ट्र का निमार्ण होता है। राष्ट्र निमार्ण का काम एक रचनात्मक और उत्साह से भरा कार्य है। इसके लिए जरूरी है कि हम सभी अपने देश के प्रति आदर और प्यार से मिल जुल कर काम करें। ये प्यार हमारे हिन्दुस्तानी होने के नाते उमड़ कर बाहर आता है। हमारा धर्म, प्रान्त, भाषा, जाति या संस्कृति कोई भी हो हम सबसे पहले हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तान हमारा है। (तालियां) विविधता में एकता ही हमारी ताकत है। धर्मनिर्पेक्षता और सामाजिक न्याय हमारे राष्ट्र के प्रतीक हैं। कानून की नजर में सबकी बराबरी हमारी पहचान है। आज का दिन हमारे लिए अपने आपको फिर से समर्पित करने का दिन है। देश की सेवा में और हरेक नागरिक की सेवा में खासकर जो उपेक्षित हैं। ये दिन हमारे लिए बरसात के दिनों में आता है। हर साल जब हम यहां इकटठे होकर लाल किले पर तिरंगे को लहराते हुए देखते हैं तो हमारी निगाहें आसमान की ओर उठती हैं। वह बादलों को देखती हैं कि कहीं बारिश तो नहीं आ रही । इस साल भी हम आसमान की ओर आस लगाकर देख रहे थे।

मैं सूखे से पीड़ित किसानों की दिक्कतों को जानने के लिए आन्ध्रा प्रदेश गया था। मैं उन परिवारों से भी मिला जिन्होंने कर्ज के भारी बोझ के कारण अपने रोजी रोटी कमाने वालों को खो दिया था। वहां मीलों तक मुझे पानी दिखाई नहीं दिया था। मैं असम और बिहार गया और वहां उन लोगों की तकलीफ़ों को देखा जिनका जीवन बाढ़ के कारण अस्त-व्यस्त हो गया है। वहां मीलों तक पानी ही पानी नजर आ रहा था। भाइयों और बहनों, सूखा और बाढ़ ये दो ऐसी मुसीबतें हैं जो आज भी हमारे लोगों को सता रही हैं। काफी लम्बे अरसे से चली आ रही इन दिक्कतों से निपटने के लिए हमें मिल जुल कर कार्यवाही करने की जरूरत है। हमारी सरकार ने इनसे निपटने के लिए कुछ कदम उठाये हैं और इस दिशा में काफी कुछ करने का इरादा भी है।

सूखे के प्रभाव से लोगों के, लोगों को बचाने के लिए हमें गांव गांव में हल निकालने होंगे। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए लोगों के संगिठ, लोगों को संगठित करना होगा। हम सिंचाई क्षेत्र में निवेश बढायेंगे और हरेक नदी घाटी की

(24)

हो। मैं आप से और सभी राजनेताओं से अनुरोध करता हूं कि जल संशाधनों के परिवर्धन की चुनौती से निपटने के लिए एक राष्ट्रीय रूख और नजरिया अपनायें। पानी की समस्या से निपटना एक महत्वपूर्ण कार्य है। चाहे वह पीने के लिए हो, या खेती के लिए हो। इसीलिए हमने इसे अपने ग्रामीण इलाकों के लिए नई पहल का एक हिस्सा बनाया है।

सिंचाई के अलावा हमें इस नई पहल में किसानों को आसानी से कर्ज मुहैया कराने के लिए भी कुछ कदम उठाये हैं। नई पहल के तहत ग्रामीण इलाकों में सिंचाई, कर्ज, बिजली, प्राथमिक शिक्षा, चिकित्सा सेवा, सड़कों का निमार्ण आप बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश करना आवश्यक है। इसके लिए हम जरूरी कदम उठायेंगे। कृषि के विस्तार में साइंस और टैक्नोलॉजी की अहम भूमिका है। सूखी जमीन पर खेती करने, फसल चक्कर में बदलाव लाने, लघु सिंचाई और पशुधन में सुधार लाने के लिए हम मॉडर्न साइंस और टैक्नोलॉजी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करेंगे। गांव को सड़कों और दूरसंचार से जोड़ने तथा सूचना पहुंचाने में किसानों को बड़ा लाभ मिल सकता है। इसमें निजी क्षेत्र और समुदाय का सहयोग प्राप्त हो तो सरकारी प्रयासों को और बढ़ावा मिल सकता है।

मित्रो, लगभग तीस साल पहले श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने गरीबी हटाओ का नारा दिया था। हमने गरीबी के प्रभाव को कम किया तो है। किन्तु इसे पूरी तरह से खत्म करने के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। हम अपनी अर्थव्यवस्था को आधुनिक और उदार बनाते हुए हर उद्यमी को फलने फूलने का मौका देंगे। गरीबी हटाने के लिए ये रास्ता जरूरी है। लेकिन ऐसा करते समय हमें अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछड़े वर्गों तथा अल्पसंख्यकों का भी खास दिक्कतों पर तथा उनके अधिकारों पर विशेष ध्यान देना होगा। आदिवासी इलाकों के विकास में उनकी जरूरतों तथा ख्वाहिशों का पूरा ध्यान रखना होगा। महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाना एक खास प्राथमिकता है और इसके लिए लड़कियों को पढ़ाना एक पहला कदम है। बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं। हमारी आर्थिक नीतियों में ये ख्याल रखना होगा कि बच्चों के अधिकरों पर कोई बुरा असर न पड़े तथा उन्हें फलने फूलने के अधिक से अधिक अवसर मिलें। हम बच्चों से संबद्ध मौजूदा योजनाओं और कार्यक्रमों का विस्तार करेंगे तथा उन्हें नया रूप देंगे। हमें बच्चों के पोषण पर विशेष

चुनौती से निपटने के लिए काम के लिए अनाज कार्यक्रम हमारी रणनीति का एक अहम हिस्सा होगा। इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में नये निवेश करने से भी नये नये रोजगार पैदा होंगे। हमारा लक्ष्य ये होना चाहिए कि अधिक तेजी से विकास हो और साथ ही इसका लाभ सभी लोगों को समान रूप से मिले। इसी रास्ते से बेरोजगारी तथा गरीबी दूर हो सकेगी। आर्थिक विकास तथा मॉडर्नाईजेशन की हमारी नीतियों में सामाजिक न्याय, आपसी मेलजोल, ग्रामीण विकास, प्रान्तीय सन्तुलन तथा पर्यावरण पर ध्यान देना चाहिए।

प्यारे देशवासियो, हमने नेशनल कॉमन मीनिमम प्रोग्राम में से सात ऐसे सैक्टर चुने हैं जिनपर खासतौर से ध्यान दिया जाएगा। ये हैं–कृषि, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, शहरी इलाकों का सुधार तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर। ये हमारे सात सूत्र हैं। ये सात सूत्र हमारे साझा कार्याक्रम के प्रमुख अंग हैं। जिनपर शेष कार्याक्रमों की सफलता निर्भर करती है। कृषि, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार आम आदमी से जुड़े क्षेत्र हैं और इन्हीं की चिन्ता उन्हें रहती है। इन्फ्रास्ट्रक्चर में बिजली, सड़क, रेल, बन्दरगाह तथा हवाई अडडे शामिल हैं और इनके विकास पर ही देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है। इन सूत्रों से संबंध जो योजनाएं और प्राथमिकताएं हैं उनकी चर्चा नेशलन कॉमन मीनिमम प्रोग्राम में और राष्ट्र के नाम मेरे पहले सम्बोधन में तथा वित्तमंत्री के हाल के बजट भाषण में विस्तार से की गयी है।

भाइयो और बहनो, आज मुझे कोई वादे नहीं करने हैं बल्कि वादे निभाने हैं। मेरे लिए और केन्द्र तथा राज्य सरकारों के लिए असली चुनौती हमारी घोषित नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने की है। लोगों के फायदे के लिए सरकार तरक्की का एक असरदान साधन बने, इसके लिए केन्द्र व राज्य सरकारों तथा स्थानीय निकायाओं को मिलकर काम करना होगा। सरकार हर लेवल पर विकास के लिए कोशिश कर रही है। लेकिन यदि सरकार को नतीजे देने हैं तो सरकार के काम करने के तरीके में सुधार लाना होगा। हमें अफसरों को अधिक जिम्मेदार बनाना होगा। सरकार में और ज्यादा खुलापन लाना होना। हमें सरकारी उद्यमों को ज्यादा कुशल बनाना होगा। देश के नागरिक ऐसी सरकारें चाहते हैं। जो उनके प्रति जबावदेह हों व सरकारी कामों में इमानदारी और कुशलता चाहते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, सार्वजनिक जीवन में नैतिकता के सवाल ने हमारे लोगों को बार बार चिन्तित किया है। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए हमने बार बार संवैधानिक, कानूनी और प्रशासनिक तरीके ढूंढने की कोशिश भी की है। अब मैं समझता हूं समय आ गया है जब हमें आम सहमति से कुछ नियम बनाने होंगे। सभी राजनैतिक दलों के लिए एक आचार संहिता बनानी होगी। सार्वजनिक जीवन में सभी लोगों के लिए एक नैतिक संहिता बनानी होगी। सरकार कामकाज के लिए बेहतरीन कार्यप्रणाली लागू करनी होगी। इस अहम मौके पर हम सब मिलकर आम सहमति से इस तरह के नियम बनाने का संकल्प लें जिससे हमारे संविधान में नियम

मूल्यों को कायम रखा जा सके। हमने अपने भीतर और अपनी पार्टियों के भीतर भी झांकना होगा। अपने आपसे पूंछना होगा कि सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों में आई इस गिरावट के असली वजह क्या है। हम अपनी सरकारी संस्थाओं, अपने राजनैतिक दलों और हर लेवल पर सरकार में किस तरह सुधार ला सकते हैं। जब हमने पहले आर्थिक सुधार शुरू किए थे। तो हमने व्यापारियों को नौकरशाही के शिंकजे से आजाद कराने की कोशिश की थी। हम निजी उद्यमों और निजी पहल को बढ़ावा देते रहेंगे। लेकिन हमारे जैसे विकासशील देशों में सच्चाई तो ये है कि सरकारों को भी भुलाया नहीं जा सकता। क्योंकि इन देशों में सरकार की अहम भूमिका होती है।

आज आर्थिक सुधारों में बड़ी चुनौती ये है कि सरकार में नई जान कैसे फूंकी जाये ताकी ये अपनी सही भूमिका निभा सके। आखिर सरकार क्या है? इसके अंग क्या हैं? जन प्रतिनिधि और लोकसेवक ही सरकार के मुख्य अंग हैं। इसलिए सरकार में सुधार लाने का मतलब है जनप्रतिनिधियों तथा लोक सेवकों के कामकाज में सुधार लाना। इसलिए मेरे प्यारे देशवासियो एक नागरिक होने के नाते आप भी इन सुधारों को लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। लोकतांत्रिक संस्थाओं को ज्यादा जबावदेह बनाने के लिए हम ग्राम पंचायतों और शहरी निकायओं को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबन्द्ध हैं। हमें इन लोकतांत्रिक संस्थाओं और उनके सदस्यों की कार्यकुशलता को बढ़ाना होगा। ये तभी संभव होगा जब हम उन्हें पैसा और कार्य प्रभावी ढंग से सौंप दें। अगर आज हम पंचायती राज को प्रभावी ढंग से इस्तेमाल में लायें तो हम प्राथमिक शिक्षा, चिकित्सा सेवाएं, पीने का साफ पानी और सफाई जैसी बुनियादी सुविधाएं अधिक कारगर ढंग से मुहैया कर सकेंगे।

जब हम सरकारी संस्थओं में सुधार या पंचायती राज के बारे में बात करते हैं तो हमारा ध्यान श्री राजीव गांधी जी की ओर जाता है जिन्होंने इन दोनों क्षेत्रों में कई नये प्रयास किए थे। लगभग बीस साल पहले श्री राजीव गांधी जी ने पहली बार देश का ध्यान उस समय नई उभर रही इलैक्ट्रोनिक्स और कम्प्यूटर क्रान्ति की ओर खींचा था। जिस उमंग और उत्साह से हमारे देश के युवाओं ने आईटी रिव्यूलूशन में हिस्सा लेकर भारत को आईटी सुपर पॉवर बना दिया है उसका श्रेय राजीव जी की दूरदृष्टिता को जाता है। आज ये संतोष की बात है कि हम इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी

वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय आन्दोलन चलाना होगा। हम उच्च शिक्षा को नौकरशाही या किसी विचारधारा का कैदी नहीं बनने देंगे। इसे प्रोफेशनल एक्सीलैंस तथा इंटीलैक्चुअल इन्टेगिरिटी की बुनियादों पर खड़ा होना होगा। शिक्षा में एक्सीलैंस की चाह तथा सामाजिक समानता की भावना शामिल होनी चाहिए। आदरणीय डॉक्टर अम्बेडकर जी ने उपेक्षित लोगों के अधिकार दिलाने में शिक्षा के महत्व को बहुत पहले ही समझ लिया था। डॉक्टर अम्बेडकर का कहना था कि हम भौतिक लाभ छोड़ सकते हैं किन्तु हम उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार तथा अवसर नहीं छोड़ सकते।

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत एक विशाल देश है। जिसके कई राज्य दुनिया के कई देशों से भी बड़े हैं। विकास का लाभ देश के कौने कौने तक पहुंचाने के लिए केन्द्र और राज्यों को सहयोग की भावना से काम करना होगा। विकास सभी का सांझा लक्ष्य रहा है। इसे प्राप्त करने के लिए ये केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है कि वह राज्यों की मदद करे। लेकिन राज्य और स्थानीय सरकारों को भी इस दिशा में काफी कुछ करना होगा। विकास, सामाजिक न्याय और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए वे काफी कुछ कर सकते हैं। उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार जरूरी साधन जुटाने होंगे। साथ ही ये जरूरी है कि शासन की गुणवत्ता और प्रभाव पर भी ज्यादा से ज्यादा ध्यान दें। मैं जितना समाज के उपेक्षित तबकों के बारे में चिन्तित हूं उतनी ही चिन्ता मुझे पिछड़े प्रान्तों की भी है। हम कम विकसित प्रान्तों में नये निवेश को बढ़ावा देंगे। हम वहां विकास से जुड़ी संस्थाओं को मजबूत बनाने में मदद करेंगे। उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा जम्मू और कश्मीर में प्रशासन और विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता रहेगा। वहां विकास इस तरह से होना चाहिए जिससे की रोजगार के नये अवसर पैदा हों ताकि इन प्रान्तों के युवक नई आशा और विश्वास के साथ सुनहरे भविष्य की ओर देख सकें। ये प्रान्त हमारे देश के बहुत ही सुन्दर प्रदेश हैं। यदि हम विकास एवं टूरिज्म के लिए अनुकूल माहौल बनाने के लिए मिलकर काम करें तो ये प्रदेश ज्यादा खुशहाल बन सकते हैं।

आर्थिक विकास के लिए शान्ति, सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता और आपसी मेल-मिलाप बहुत जरूरी है। हमारी जनता चाहती है कि वह सुरक्षित एवं सामान्य जीवन जी सकें, कि वह सुरक्षित एवं सामान्य जीवन जी सकें। अपना कार्य कर सकें और जीवन का आनन्द ले सकें। हमें उन सभी देश विरोधी तथा समाज विरोधी ताकतों का मुकाबला करना होगा जो आम जीवन में बाधा डालते हैं। चाहे वो आतंकवादी हों, कम्युनल फोरसिस हो या ऐसी विघटनकारी ताकतें हों। आतंकवाद हमारी आम जिंदगी के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है और हमें संगठित होकर इससे लड़ना होगा। हिंसा से किसी भी समाज की प्रगति तथा उन्नति नहीं होती। हम

लेकिन कोई भी ग्रुप हिंसा का रास्ता छोड़कर बातचीत करने के लिए राजी हो तो हम भी उनसे बातचीत करने के लिए तैयार हैं।

मित्रो, हमारी अर्थव्यवस्था पिछले दस सालों से विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ती जा रही है। आज मैं चाहता हूं कि आपमें से हरेक व्यक्ति नये बाजारों की खोज में और नये अवसरों का लाभ उठाने में वैसा ही आत्मविश्वास दिखाया जैसा की हमारे आजादी के सिपाहियों ने देश का आजाद करने में दिखाया था। हमारा समाज एक खुला समाज रहा है। लेकिन विश्व के लिए अपने दरवाजे खोलते समय हमने अपनी पहचान कभी नहीं खोई।

मैं आपको फिर से गांधी जी के शब्दों को याद दिलाना चाहता हूं। उनके अनुसार हमारा देश मजबूत नींव पर खड़े एक घर के समान होना चाहिए। जिसकी खिड़कियां पूरी तरह खुली रहें। ताकी इसके अन्दर हर तरफ से बेरोकटोक बाहर से हवा आ सके। गांधी जी ने कहा था मैं चाहता हूं कि हर दिशा से मेरे घर में हवा बहे लेकिन इससे मेरे पांव नहीं डगमगायें। सदियों से विश्व के प्रति हमारा सांस्कृतिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण ऐसा ही रहा है। आज भी हमें एक ज्यादा आत्मनिर्भर और आधुनिक अर्थव्यवस्था का निर्माण करते हुए ऐसा ही रूख अपनाना होगा। ऐसे दृष्टिकोण से ही विकास संभव होगा और आम जनता की दिक्कतें दूर होंगी। हम अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाकर और लोकतंत्र में सभी को शामिल करके दुनिया में अपना सिर ऊंचा करके चल सकते हैं। हम लोकतंत्र और विकास के, विकास के प्रति जितने प्रतिबद्ध हैं उतने ही हम अपने पड़ौसी देशों और सारी दुनिया के साथ, शान्ति के साथ रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा इतिहास इसका गवाह है। सदियों से हमने दुनिया के विभिन्न भागों से आने वाले यात्रियों और व्यापारियों का खुले दिल से स्वागत किया है। हम भी व्यापार की खोज में और अपने दर्शन के प्रसार प्रचार के लिए दुनिया के दूर दराज देशों में गये। ये सब प्रयास शान्तिपूर्वक किए गये। आज भी हम एक शान्त और खुशहाल पड़ौस में रहना चाहते हैं। हमारी सेनाओं एवं सुरक्षाबलों को उनके कल्याण तथा मॉडर्नाईजेशन के लिए हम भरपूर मदद करेंगे।

हमारी सेनाएं देश की अखण्डता की रक्षा करने में अहम भूमिका निभाती हैं। वह केवल सरहद की सुरक्षा की नहीं करतीं बल्कि वह उन सभी जगहों पर पहुंती हैं जहां आम आदमी को उनकी उनके उनके मदद की जरूरत होती है। सुरक्षा के साथ साथ हमें विकास की ओर भी ध्यान देना होगा। हमारी तरह हमारे सभी पड़ौसी देश भी विकासशील देश हैं और हम सभी का लक्ष्य हमारे नागरिकों के जीवनस्तर में सुधार लाना हैं। हम अपने पड़ौसियों से केवल सीमाओं से ही नहीं बंधे हैं बल्कि तकदीर से भी बंधे हैं। पड़ौस में शान्ति और खुशहाली लाना हमारे लिए बहुत ही

है कि पाकिस्तान के साथ सभी मसलों का हल बातचीत के जरिए निकाला जाये। पाकिस्तान के साथ चल रही संयुक्त बातचीत को हम निश्चित रूप से दृढ़ संकल्प और निष्ठा के साथ आगे बढ़ायेंगे। शान्ति कायम रखने के लिए आपस में विश्वास जरूरी है। जाहिर है वे सीमापार आतंकवाद और खून खराबे से ये काम ज्यादा कठिन और जटिल हो सकता है। चीन के साथ हमारे संबंधों में आज जो अच्छे रूझान नजर आ रहे हैं उनकी शुरूआत १९८८ में श्री राजीव गांधी की चीन यात्रा में की गयी पहल से हुई है। हम चीन के साथ आपसी संबंधों को मजबूत और अधिक गहरा बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सीमा के मसले को हल करने के लिए हम आपसी बातचीत को जारी रखेंगे। हम छोटे बड़े सभी देशों के साथ अपनी दोस्ती को महत्व देते हैं और सभी देशों के साथ गहरे आर्थिक संबंध बनाना चाहेंगे।

भाइयो और बहनो एक सौ करोड़ से ज्यादा की आबादी वाला लोकतंत्र देश होने के नाते हमें विश्व मामलों में एक महतवूर्ण भूमिका निभानी होगी। भारतवासियों से ज्ञान की खोज में बहुत बड़ा योगदान दिया है। भारतीय मूल के लोगों द्वारा अनेक देशों में निभाई गयी भूमिका की हम सराहना करते हैं। भारतीय मूल के लोग जहां कहीं भी रहते हैं हमारी संस्कृति के वो वाहक हैं। उनके योगदान को हम महत्व देते हैं। शायद वो यहां हों या विदेशों में वह हमारे ब्रेन बैंक हैं। उन्होंने ये दिखा दिया है कि यदि अनुकूल माहौल मिले तो हम भारतीय लोग कितना बेहतरीन कार्य कर सकते हैं। उन्होंने ये दिखाया है कि यदि जरूरी बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराया जाये और व्यक्तिगत प्रयासों को बढ़ावा दिया जाये तो भारतीय लोग विश्व में सबसे उत्तम बन सकते हैं। हमारी सरकार के लिए भाइयो और बहनो ये एक बहुत बड़ी चुनौती है कि वह देश में एक ऐसा माहौल बनायें। योग्यता को मान्यता मिले। कड़ी महनत को फल मिले और रचनात्मक कार्यों को श्रेय मिले।

मेरे प्यारे देशवासियो, भाइयो और बहनो, हमारी सरकार को कई कदम उठाने होंगे जिनसे आपकी जरूरतों और ख्वाहिशें पूरी हो सकें। ये एक ऐसी जिम्मेदारी है जिसके लिए हम आपके प्रति जबावदेह हैं और जिम्मेदारी को निभाना हमारा कर्तव्य है। प्रजातंत्र का यही निचोड़ है और इसे मैं नम्रता से स्वीकार करता हूं। सरकार की ताकत से जनता की ताकत बहुत अधिक है और दोनों ताकतों को मिलाने से एक मजबूत राष्ट्र का निमार्ण किया जा सकता है। सरकार कितना कर

30

आज भी देश की युवा पीढ़ी महात्मा गांधी से प्रेरणा लेती है जिन्होंने एक ताकतवर ब्रिटिश शासन की नींव हिलाकर रख दी थी। मैं चाहता हूं कि हमारे युवाएं महात्मा गांधी जी के संदेश को ठीक तरह से समझें। यदि मन में पक्का इरादा हो तो हम सबके पास देश की तस्वीर और तकदीर बदलने की ताकत है।

भाइयो और बहनो, आइए हम आजादी की लड़ाई के उन मूल्यों पर पुनर्जीवित करने के लिए मिल कर काम करें। जिनकी आज देश को सख्त जरूरत है। आदर्श व आत्म बलिदान, अनुशासन और दृढ़ संकल्प यही एक मात्र रस रस्ता है जिससे भारत विश्व के देशों में अपनी अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकेगा। ये मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए इस महान देश की जनता के पास जरूरी इच्छा शक्ति, पक्का इरादा और साधन मौजूद हैं। भारत की तकदीर हमें पुकार रही है कि हम अपने सम्पूरण ज्ञान, अनुभव और विवेक का मिलजुल कर उपयोग करें। जिससे उज्जवल भविष्य का ये सपना साकार हो सके। मुझे पूरा यकीन है कि हम इसमें जरूर कामयाब होंगे।

प्यारे बच्चो, अब आप मेरे साथ मिलकर तीन बार बोलो जय हिन्द-(जय हिन्द), जय हिन्द-(जय हिन्द), जय हिन्द-(जय हिन्द)।

धन्यवाद।